



1061CH04

तृतीयः पाठः

## शिशुलालनम्

प्रस्तुतः पाठः कुन्दमाला-इतिनाम्नो दिङ्नागविरचितस्यः संस्कृतस्य प्रसिद्धनाट्यग्रन्थस्य पञ्चमाङ्कात् सम्पादनं कृत्वा सङ्कलितोऽस्ति। अत्र नाटकांशे रामः स्वपुत्रौ लवकुशौ सिंहासनम् आरोहयितुम् इच्छति किन्तु उभावपि सविनयं तं निवारयतः। सिंहासनारूढः रामः उभयोः रूपलावण्यं दृष्ट्वा मुग्धः सन् स्वक्रोडे गृह्णाति। पाठेऽस्मिन् शिशुवात्सल्यस्य मनोहारिवर्णनं विद्यते।

(सिंहासनस्थः रामः। ततः प्रविशतः विदूषकेनोपदिश्यमानमार्गौ तापसौ कुशलवौ)

विदूषकः - इत इत आर्यौ!

कुशलवौ - (रामम् उपसृत्य प्रणम्य च) अपि कुशलं महाराजस्य?

रामः - युष्मद्दर्शनात् कुशलमिव। भवतोः किं वयमत्र कुशलप्रश्नस्य भाजनम् एव, न पुनरतिथिजनसमुचितस्य कण्ठाश्लेषस्य। (परिष्वज्य) अहो हृदयग्राही स्पर्शः।



(आसनार्धमुपवेशयति)

- उभौ - राजासनं खल्वेतत्, न युक्तमध्यासितुम्।
- रामः - सव्यवधानं न चारित्रलोपाय। तस्मादङ्क - व्यवहितमध्यास्यतां सिंहासनम्।  
(अङ्कमुपवेशयति)
- उभौ - (अनिच्छां नाटयतः) राजन्!  
अलमतिदाक्षिण्येन।
- रामः - अलमतिशालीनतया।  
भवति शिशुजनो वयोऽनुरोधाद्  
गुणमहतामपि लालनीय एव।  
व्रजति हिमकरोऽपि बालभावात्  
पशुपति-मस्तक-केतकच्छदत्वम्॥
- रामः - एष भवतोः सौन्दर्यावलोकजनितेन कौतूहलेन पृच्छामि-क्षत्रियकुल-  
पितामहयोः सूर्यचन्द्रयोः को वा भवतोर्विशस्य कर्ता?
- लवः - भगवान् सहस्रदीधितिः।
- रामः - कथमस्मत्समानाभिजनौ संवृत्तौ?
- विदूषकः - किं द्वयोरप्येकमेव प्रतिवचनम्?
- लवः - भ्रातरावावां सोदर्यौ।
- रामः - समरूपः शरीरसन्निवेशः। वयसस्तु न किञ्चिदन्तरम्।
- लवः - आवां यमलौ।
- रामः - सम्प्रति युज्यते। किं नामधेयम्?
- लवः - आर्यस्य वन्दनायां लव इत्यात्मानं श्रावयामि (कुशं निर्दिश्य) आर्योऽपि  
गुरुचरणवन्दनायाम् .....
- कुशः - अहमपि कुश इत्यात्मानं श्रावयामि।
- रामः - अहो! उदात्तरम्यः समुदाचारः।  
किं नामधेयो भवतोर्गुरुः?

- लवः - ननु भगवान् वाल्मीकिः।
- रामः - केन सम्बन्धेन?
- लवः - उपनयनोपदेशेन।
- रामः - अहमत्र भवतोः जनकं नामतो वेदितुमिच्छामि।
- लवः - न हि जानाम्यस्य नामधेयम्। न कश्चिदस्मिन् तपोवने तस्य नाम व्यवहरति।
- रामः - अहो माहात्म्यम्।
- कुशः - जानाम्यहं तस्य नामधेयम्।
- रामः - कथ्यताम्।
- कुशः - निरनुक्रोशो नाम....
- रामः - वयस्य, अपूर्वं खलु नामधेयम्।
- विदूषकः - (विचिन्त्य) एवं तावत् पृच्छामि। निरनुक्रोश इति क एवं भणति?
- कुशः - अम्बा।
- विदूषकः - किं कुपिता एवं भणति, उत प्रकृतिस्था?
- कुशः - यद्यावयोर्बालभावजनितं किञ्चिदविनयं पश्यति तदा एवम् अधिक्षिपति-  
निरनुक्रोशस्य पुत्रौ, मा चापलम् इति।
- विदूषकः - एतयोर्यदि पितुर्निरनुक्रोश इति नामधेयम् एतयोर्जननी तेनावमानिता  
निर्वासिता एतेन वचनेन दारकौ निर्भर्त्सयति।
- रामः - (स्वगतम्) धिङ् मामेवंभूतम्। सा तपस्विनी मत्कृतेनापराधेन स्वापत्यमेवं  
मन्युगर्भैरक्षरैर्निर्भर्त्सयति।
- (सवाष्पमवलोकयति)
- रामः - अतिदीर्घः प्रवासोऽयं दारुणश्च। (विदूषकमवलोक्य जनान्तिकम्)  
कुतूहलेनाविष्टो मातरमनयोर्नामतो वेदितुमिच्छामि। न युक्तं च  
स्त्रीगतमनुयोक्तुम्, विशेषतस्तपोवने। तत् कोऽत्राभ्युपायः?

- विदूषकः - (जनान्तिकम्) अहं पुनः पृच्छामि। (प्रकाशम्) किं नामधेया युवयोर्जननी?
- लवः - तस्याः द्वे नामनी।
- विदूषकः - कथमिव?
- लवः - तपोवनवासिनो देवीति नाम्नाह्वयन्ति, भगवान् वाल्मीकिर्वधूरिति।
- रामः - अपि च इतस्तावद् वयस्य!
- मुहूर्त्तमात्रम्।
- विदूषकः - (उपसृत्य) आज्ञापयतु भवान्।
- रामः - अपि कुमारयोरनयोरस्माकं च सर्वथा समरूपः कुटुम्बवृत्तान्तः?
- (नेपथ्ये)
- इयती वेला सञ्जाता, रामायणगानस्य नियोगः किमर्थं न विधीयते?
- उभौ - राजन्! उपाध्यायदूतोऽस्मान् त्वरयति।
- रामः - मयापि सम्माननीय एव मुनिनियोगः। तथाहि-
- भवन्तौ गायन्तौ कविरपि पुराणो व्रतनिधिर्  
गिरां सन्दर्भोऽयं प्रथममवतीर्णो वसुमतीम्।  
कथा चेयं श्लाघ्या सरसिरुहनाभस्य नियतं  
पुनाति श्रोतारं रमयति च सोऽयं परिकरः॥
- वयस्य! अपूर्वोऽयं मानवानां सरस्वत्यवतारः, तदहं सुहृज्जनसाधारणं  
श्रोतुमिच्छामि। सन्निधीयन्तां सभासदः, प्रेष्यतामस्मदन्तिकं सौमित्रिः,  
अहमप्येतयोश्चिरासनपरिखेदं विहरणं कृत्वा अपनयामि।
- (इति निष्क्रान्ताः सर्वे)

### शब्दार्थः

|                              |                    |                                                |                                        |
|------------------------------|--------------------|------------------------------------------------|----------------------------------------|
| पितामहः                      | - पितुः पिता       | - पिता के पिता                                 | - Grand father                         |
| सहस्रदीधितिः                 | - सूर्यः           | - सूर्य                                        | - The sun                              |
| कण्ठाश्लेषस्य                | - कण्ठे आश्लेषस्य  | - गले लगाने का                                 | - Hug                                  |
| परिष्वज्य                    | - आलिङ्गनं कृत्वा  | - आलिङ्गन करके                                 | - Embracing                            |
| विचिन्त्य                    | - विचार्य          | - विचार करके                                   | - Considering                          |
| अध्यासितुम्                  | - उपवेष्टुम्       | - बैठने के लिए                                 | - To sit                               |
| सव्यवधानम्                   | - व्यवधानेन सहितम् | - रुकावट सहित                                  | - With obstruction                     |
| अध्यास्यताम्                 | - उपविश्यताम्      | - बैठिये                                       | - Be seated                            |
| अलमतिदाक्षिण्येन-अलमतिकौशलेन |                    | - अत्यधिक दक्षता, अधिक कुशलता नहीं करें        | - Leave aside the excessive adroitness |
| अङ्गम्                       | - क्रोडम्          | - गोद में                                      | - Lap                                  |
| हिमकरः                       | - चन्द्रः          | - चन्द्रमा                                     | - The moon                             |
| पशुपतिः                      | - शिवः             | - शिव                                          | - Lord shiva                           |
| केतकछदत्वम्                  | - केतकस्य छदत्वम्  | - केतकी (केवड़े) के पुष्प से बनी मस्तक की शोभा | - Crown made of the screw flower       |
| स्वगतम्                      | - आत्मगतम्         | - मन ही मन                                     | - Inner self                           |
| समानाभिजनौ                   | - समानकुलोत्पन्नौ  | - एक कुल में पैदा होने वाले                    | - Belonging to the same family chain   |
| संवृत्तौ                     | - संजातौ           | - हो गये                                       | - Both became                          |
| प्रतिवचनम्                   | - उत्तरम्          | - उत्तर                                        | - Reply                                |

|               |                                              |                              |                                                             |
|---------------|----------------------------------------------|------------------------------|-------------------------------------------------------------|
| सोदर्यौ       | - सहोदरौ/यमलौ                                | - सहोदर/सगे भाई              | - Real brothers/<br>Twins                                   |
| शरीरसन्निवेशः | - अङ्ग-रचनाविन्यासः                          | - शरीर की बनावट              | - Body<br>structure                                         |
| उदात्तरम्यः   | - अत्यन्तः रमणीयः                            | - अत्यधिक मनोहर              | - Very<br>fascinating                                       |
| समुदाचारः     | - शिष्टाचारः                                 | - शिष्टाचार                  | - Good<br>etiquette                                         |
| उपनयनोपदेशेन  | - उपनयनस्य उपदेशेन<br>(उपनयन-संस्कारदीक्षया) | - उपनयन की दीक्षा<br>के कारण | - By giving the<br>teaching of<br>sacred thread<br>ceremony |
| नामधेयम्      | - नाम                                        | - नाम                        | - Name                                                      |
| निरनुक्रोशः   | - निर्दयः                                    | - दया रहित                   | - Unkind                                                    |
| वयस्य         | - मित्र                                      | - मित्र                      | - Friend                                                    |
| भणति          | - कथयति                                      | - कहता है                    | - Says                                                      |
| अम्बा         | - जननी                                       | - माता                       | - Mother                                                    |
| उत            | - अथवा                                       | - अथवा                       | - Or                                                        |
| प्रकृतिस्था   | - सामान्या मनःस्थितिमयी                      | - स्वाभाविक रूप से           | - In normal<br>condition                                    |
| अधिक्षिपति    | - अधिक्षेपं करोति                            | - फटकारती है                 | - Snubs                                                     |
| चापलम्        | - चपलताम्                                    | - चंचलता को                  | - Fickleness                                                |
| अवमानिता      | - तिरस्कृता                                  | - अपमानित                    | - Insulted                                                  |
| दारकौ         | - पुत्रौ                                     | - दो पुत्रों को              | - Both sons                                                 |
| निर्भर्त्सयति | - तर्जयति                                    | - धमकाती है                  | - Scolds                                                    |
| निःश्वस्य     | - दीर्घ श्वासं गृहीत्वा                      | - दीर्घ श्वास लेकर           | - Sighing                                                   |
| स्वापत्यम्    | - स्वसन्ततिम्                                | - अपनी सन्तान को             | - To own<br>children                                        |

- अन्वय - गुणमहताम् अपि वयोऽनुरोधात् शिशुजनः लालनीयः एव भवति। बालभावात् हि हिमकरः अपि पशुपति-मस्तक-केतकच्छदत्वं व्रजति।
- भाव - अत्यधिक गुणी लोगों के लिए भी छोटी उम्र के कारण बालक लालनीय ही होता है। चन्द्रमा बालभाव के कारण ही शङ्कर के मस्तक का आभूषण बनकर केतकी पुष्पों से निर्मित आभूषण की भाँति शोभित होता है।
- अन्वय - भवन्तौ गायन्तौ, पुराणः व्रतनिधिः कविः अपि, वसुमतीम् प्रथमम् अवतीर्णः गिराम् अयं सन्दर्भः, सरसिरुहनाभस्य च इयं श्लाघ्या कथा, सः च अयं परिकरः नियतं श्रोतारं पुनाति रमयति च।
- भाव - भगवान् वाल्मीकि द्वारा निबद्ध पुराणपुरुष की कथा, कुश-लव द्वारा श्री राम को सुनायी जानी थी, उसी की सूचना देते हुए नेपथ्य से कुश और लव को बिना समय नष्ट किये अपने कर्तव्य का पालन करने का निर्देश दिया जाता है। दोनों राम से आज्ञा लेकर जाना चाहते हैं तब श्री राम उपर्युक्त श्लोक के माध्यम से उस रचना का सम्मान करते हैं।

आप दोनों (कुश और लव) इस कथा का गान करने वाले हैं, तपोनिधि पुराण मुनि (वाल्मीकि) इस रचना के कवि हैं, धरती पर प्रथम बार अवतरित होने वाला स्फुट वाणी का यह काव्य है और इसकी कथा कमलनाभि विष्णु से सम्बद्ध है इस प्रकार निश्चय ही यह संयोग श्रोताओं को पवित्र और आनन्दित करने वाला है।

### अभ्यासः

#### 1. एकपदेन उत्तरं लिखत-

- (क) कुशलवौ कम् उपसृत्य प्रणमतः?
- (ख) तपोवनवासिनः कुशस्य मातरं केन नाम्ना आह्वयन्ति ?
- (ग) वयोऽनुरोधात् कः लालनीयः भवति?
- (घ) केन सम्बन्धेन वाल्मीकिः लवकुशयोः गुरुः?
- (ङ) कुत्र लवकुशयोः पितुः नाम न व्यवहियते?

#### 2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

- (क) रामाय कुशलवयोः कण्ठाश्लेषस्य स्पर्शः कीदृशः आसीत्?
- (ख) रामः लवकुशौ कुत्र उपवेशयितुम् कथयति?
- (ग) बालभावात् हिमकरः कुत्र विराजते?

(घ) कुशलवयोः वंशस्य कर्ता कः?

(ङ) कुशलवयोः मातरं वाल्मीकिः केन नाम्ना आह्वयति?

3. रेखाङ्कितेषु पदेषु विभक्तिं तत्कारणं च उदाहरणानुसारं निर्दिशत-

|                                          | विभक्तिः | तत्कारणम्   |
|------------------------------------------|----------|-------------|
| यथा- राजन्! अलम् अतिदाक्षिण्येन।         | तृतीया   | 'अलम्' योगे |
| (क) रामः लवकुशौ आसनार्धम् उपवेशयति।      | .....    | .....       |
| (ख) धिङ् माम् एवं भूतम्।                 | .....    | .....       |
| (ग) अङ्गव्यवहितम् अध्यास्यतां सिंहासनम्। | .....    | .....       |
| (घ) अलम् अतिविस्तरेण।                    | .....    | .....       |
| (ङ) रामम् उपसृत्य प्रणम्य च।             | .....    | .....       |

4. यथानिर्देशम् उत्तरत-

- (क) 'जानाम्यहं तस्य नामधेयम्' अस्मिन् वाक्ये कर्तृपदं किम्?
- (ख) 'किं कुपिता एवं भणति उत प्रकृतिस्था'- अस्मात् वाक्यात् 'हर्षिता' इति पदस्य विपरीतार्थकपदं चित्वा लिखत।
- (ग) विदूषकः (उपसृत्य) 'आज्ञापयतु भवान्!' अत्र भवान् इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?
- (घ) 'तस्मादङ्ग-व्यवहितम् अध्यास्यताम् सिंहासनम्'- अत्र क्रियापदं किम्?
- (ङ) 'वयसस्तु न किञ्चिदन्तरम्'- अत्र 'आयुषः' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?

5. अधोलिखितानि वाक्यानि कः कं प्रति कथयति-

|                                          | कः    | कम्   |
|------------------------------------------|-------|-------|
| (क) सव्यवधानं न चारित्र्यलोपाय।          | ..... | ..... |
| (ख) किं कुपिता एवं भणति, उत प्रकृतिस्था? | ..... | ..... |
| (ग) जानाम्यहं तस्य नामधेयम्।             | ..... | ..... |
| (घ) तस्या द्वे नाम्नी।                   | ..... | ..... |
| (ङ) वयस्य! अपूर्वं खलु नामधेयम्।         | ..... | ..... |

6. मञ्जूषातः पर्यायद्वयं चित्वा पदानां समक्षं लिखत-

शिवः शिष्टाचारः शशिः चन्द्रशेखरः सुतः इदानीम्  
अधुना पुत्रः सूर्यः सदाचारः निशाकरः भानुः

- (क) हिमकरः - .....  
(ख) सम्प्रति - .....



|                  |   |       |       |
|------------------|---|-------|-------|
| (ग) समुदाचारः    | - | ..... | ..... |
| (घ) पशुपतिः      | - | ..... | ..... |
| (ङ) तनयः         | - | ..... | ..... |
| (च) सहस्रदीधितिः | - | ..... | ..... |

**(अ) विशेषण-विशेष्यपदानि योजयत-**

| यथा- विशेषणपदानि | विशेष्यपदानि |
|------------------|--------------|
| श्लाघ्या         | - कथा        |

|                 |                       |
|-----------------|-----------------------|
| (1) उदात्तरम्यः | (क) समुदाचारः         |
| (2) अतिदीर्घः   | (ख) स्पर्शः           |
| (3) समरूपः      | (ग) कुशलवयोः          |
| (4) हृदयग्राही  | (घ) प्रवासः           |
| (5) कुमारयोः    | (ङ) कुटुम्बवृत्तान्तः |

**7. (क) अधोलिखितपदेषु सन्धिं कुरुत-**

|                     |   |       |
|---------------------|---|-------|
| (क) द्वयोः + अपि    | - | ..... |
| (ख) द्वौ + अपि      | - | ..... |
| (ग) कः + अत्र       | - | ..... |
| (घ) अनभिज्ञः + अहम् | - | ..... |
| (ङ) इति + आत्मानम्  | - | ..... |

**(ख) अधोलिखितपदेषु विच्छेदं कुरुत-**

|                  |   |       |
|------------------|---|-------|
| (क) अहमप्येतयोः  | - | ..... |
| (ख) वयोऽनुरोधात् | - | ..... |
| (ग) समानाभिजनौ   | - | ..... |
| (घ) खल्वेतत्     | - | ..... |

**योग्यताविस्तारः**

यह पाठ संस्कृतवाङ्मय के प्रसिद्ध नाटक 'कुन्दमाला' के पंचम अङ्क से सम्पादित कर लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध नाटककार दिङ्नाग हैं। इस नाटकांश में राम कुश और लव को सिंहासन पर बैठाना चाहते हैं किन्तु वे दोनों अतिशालीनतापूर्वक मना करते हैं। सिंहासनारूढ राम

कुश और लव के सौन्दर्य से आकृष्ट होकर उन्हें अपनी गोद में बिठा लेते हैं और आनन्दित होते हैं। पाठ में शिशु स्नेह का अत्यन्त मनोहारी वर्णन किया गया है।

### नाट्य-प्रसङ्गः

कुन्दमाला के लेखक दिङ्नाग ने प्रस्तुत नाटक में रामकथा के करुण अवसाद भरे उत्तरार्ध की नाटकीय सम्भावनाओं को मौलिकता से साकार किया है। इसी कथानक पर प्रसिद्ध नाटककार भवभूति का उत्तररामचरित भी आश्रित है। कुन्दमाला के छहों अङ्कों का दृश्यविधान वाल्मीकि-तपोवन के परिसर में ही केन्द्रित है। प्रस्तुत नाटकांश पञ्चम अङ्क से सम्पादित कर सङ्कलित किया गया है। लव और कुश से मिलने पर राम के हृदय में उनसे आलिंगन की लालसा होती है। उनके स्पर्शसुख से अभिभूत हो राम, उन्हें अपने सिंहासन पर, अपनी गोद में बिठाकर लाड़ करते हैं। इसी भाव की पुष्टि में नाटक में यह श्लोक उद्धृत है—

भवति शिशुजनो वयोऽनुरोधाद् गुणमहतामपि लालनीय एव ।  
व्रजति हिमकरोऽपि बालभावात् पशुपति-मस्तक-केतकच्छदत्वम् ॥

### शिशुस्नेहसमभावश्लोकाः-

अनेन कस्यापि कुलाङ्कुरेण स्पृष्टस्य गात्रेषु सुखं ममैवम् ।  
कां निर्वृतिं चेतसि तस्य कुर्याद् यस्यायमङ्कात् कृतिनः प्ररूढः ॥  
( कालिदासः )

अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात् ।  
आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते ॥  
( भवभूतिः )

धूलीधूसरतनवः क्रीडाराज्ये स्वके च रममाणाः ।  
कृतमुखवाद्यविकाराः क्रीडन्ति सुनिर्भरं बालाः ॥  
( अज्ञातकविः )

अनियतरुदितस्मितं विराजत्कतिपयकोमलदन्तकुङ्मलाग्रम् ।  
वदनकमलकं शिशोः स्मरामि स्खलदसमञ्जसमञ्जुजल्पितं ते ॥  
( अज्ञातकविः )

